रहीम के काव्य में नीति तत्व

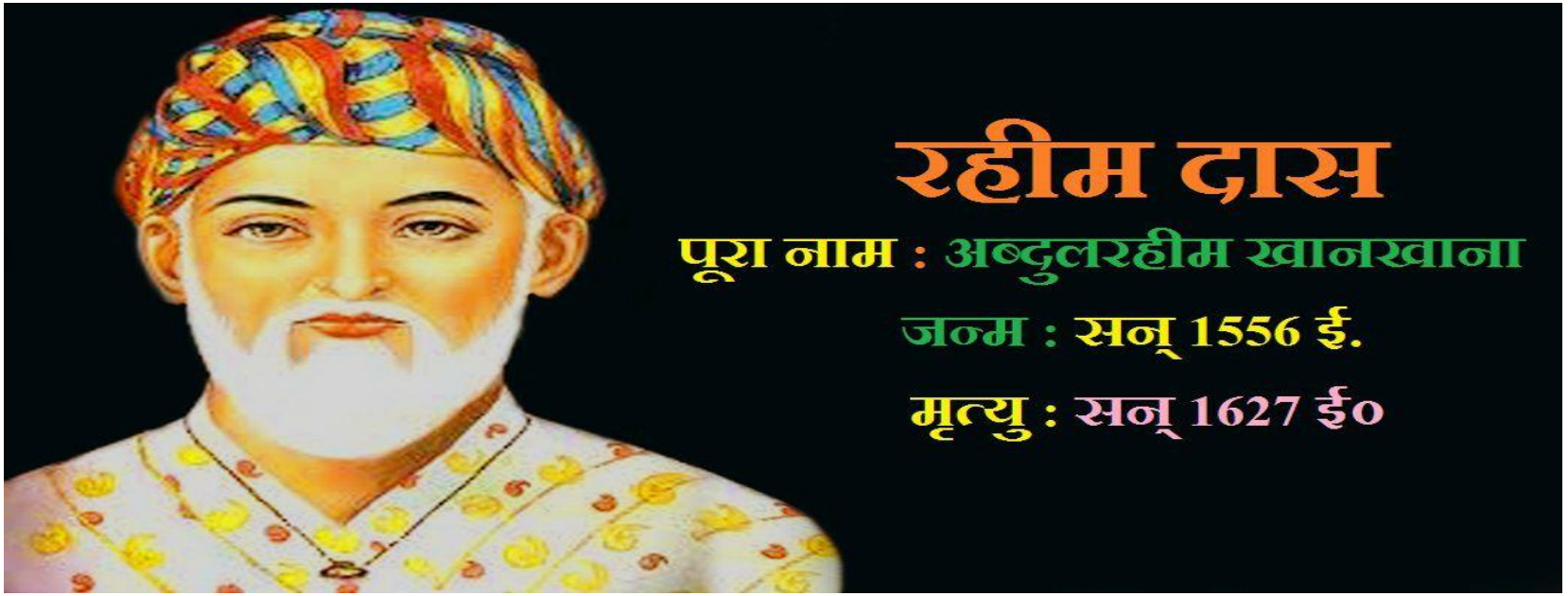

डॉ. आरिफ महात
हिंदी विभागाध्यक्ष,
विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर (स्वायत्त)

रहीम के काव्य में नीति तत्व

"रहिमन धागा प्रेम का, मत तोरो चटकाय।
टूटे पे फर ना जुरे, जुरे गाँठ परी जाय।"

अर्थ: रहीम कहते हैं क प्रेम का नाता नाज़ुक होता है. इसे झटका देकर तोड़ना उ चत नही होता। यदि यह प्रेम का धागा एक बार टूट जाता है, तो फर इसे मलाना कठिन होता है और यदि मल भी जाए तो टूटे हुए धागों के बीच में गाँठ पड़ जाती है।

रहीम के काव्य में नीति तत्व

रहिमन ओछे नरन सो, बैर भली न प्रीत।
काटे चाटे स्वान के, दोउ भाँती वपरीत।

अर्थ : गरे हुए लोगों से न तो दोस्ती अच्छी होती हैं, और न तो दुश्मनी. जैसे कुत्ता चाहे काटे या चाटे दोनों ही अच्छा नहीं होता।

रहिमन देख बड़ेन को, लघु न दीजिये डारि।
जहाँ काम आवै सुई, कहा करै तलवार।

अर्थ: बड़ों को देखकर छोटों को भगा नहीं देना चाहिए। क्यों क जहां छोटे का काम होता है वहां बड़ा कुछ नहीं कर सकता। जैसे क सुई के काम को तलवार नहीं कर सकती।

रहीम के काव्य में नीति तत्व

बिगरी बात बने नहीं, लाख करो कन कोय।
रहिमन फाटे दूध को, मथे न माखन होय।

अर्थ : मनष्य को सोचसमझ कर व्यवहार करना चाहिए,क्यों क कसी कारणवश यदि बात बिगड़ जाती है तो फर उसे बनाना कठिन होता है, जैसे यदि एकबार दूध फट गया तो लाख को शश करने पर भी उसे मथ कर मक्खन नहीं निकाला जा सकेगा ।

समय पाय फल होत है, समय पाय झरी जात।
सदा रहे नहिं एक सी, का रहीम पछितात।

अर्थ : रहीम कहते हैं क उपयुक्त समय आने पर वक्ष में फल लगता है। झड़ने का समय आने पर वह झड़ जाता है. सदा कसी की अवस्था एक जैसी नहीं रहती, इस लए दुःख के समय पछताना व्यर्थ है ।

रहीम के काव्य में नीति तत्व

जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करी सकत कुसंग।
चन्दन वष व्यापे नहीं, लपटे रहत भुजंग।

अर्थ : रहीम ने कहा की जिन लोगों का स्वभाव अच्छा होता हैं, उन लोगों को बुरी संगती भी बिगाड़ नहीं पाती, जैसे जहरीले साप सुगं धत चन्दन के वृक्ष को लपटे रहने पर भी उस पर कोई प्रभाव नहीं दाल पाते।

वे रहीम नर धन्य हैं, पर उपकारी अंग।
बाँटन वारे को लगे, ज्यो मेहंदी को रंग।

अर्थ : रहीमदास जी ने कहा की वे लोग धन्य हैं, जिनका शरीर हमेशा सबका उपकार करता हैं | जिस प्रकार मेहंदी बाटने वाले पर के शरीर पर भी उसका रंग लग जाता हैं | उसी तरह परोपकारी का शरीर भी सुशो भत रहता हैं |

रहीम के काव्य में नीति तत्व

बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।
पंथी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर।

अर्थ : बड़े होने का यह मतलब नहीं हैं की उससे कसी का भला हो. जैसे खजूर का पेड़ तो बहुत बड़ा होता हैं ले कन उसका फल इतना दूर होता है की तोड़ना मुश्किल का कम है |

बानी ऐसी बो लये, मन का आपा खोय।
औरन को सीतल करै, आपहु सीतल होय।

अर्थ : अपने अंदर के अहंकार को निकालकर ऐसी बात करनी चाहिए जिसे सुनकर दुसरों को और खुद को ख़ुशी हो |

रहीम के काव्य में नीति तत्व

रहिमन पानी रा खये, बिन पानी सब सुन।
पानी गये न ऊबरे, मोटी मानुष चुन।

अर्थ : इस दोहे में रहीम ने पानी को तीन अर्थों में प्रयोग कया है,पानी का पहला अर्थ मनुष्य के संदर्भ में है जब इसका मतलब वनम्रता से है. रहीम कह रहे हैं की मनुष्य में हमेशा वनम्रता होनी चाहिये | पानी का दूसरा अर्थ आभा, तेज या चमक से है जिसके बिना मोटी का कोई मूल्य नहीं | पानी का तीसरा अर्थ जल से है जिसे आटे से जोड़कर दर्शाया गया हैं. रहीमदास का ये कहना है की जिस तरह आटे का अस्तित्व पानी के बिना नम्र नहीं हो सकता और मोटी का मूल्य उसकी आभा के बिना नहीं हो सकता है, उसी तरह मनुष्य को भी अपने व्यवहार में हमेशा पानी यानी वनम्रता रखनी चाहिये जिसके बिना उसका मूल्यह्रास होता है |